वार्तालाप-507, पुणे-1 (महाराष्ट्र) ता-4.2.08

Disc.CD No.507, dated 4.2.08 at Pune-1 (Maharashtra)

7.30-7.38

जिज्ञासु- बाबा, संगमयुगी ब्राह्मण सो देवता कहा है और सतयुग में देवताओं को दाढ़ी मूँछ नहीं रहती। तो संगमयुगी ब्राह्मणों का क्या पार्ट है फिर दाढ़ी मूँछ रखना अच्छी बात है कि नहीं?

बाबा- साफ तो करते हैं। यहाँ तो सब साफ किये बैठे हैं।

जिज्ञासु- श्रीमत क्या कहती है?

बाबा (हंसते हुए) - श्रीमत कहती है थोड़ी मूँछ रखे रहो, ब्रह्मा की लाज रखो। जब ब्रह्मा निर्विकारी हो जाये तो तुम भी साफ करा देना।

Time: 7.30-7.38
Student: Baba, it has been said that the Confluence Age Brahmin becomes deity and the deities do not have beard and moustaches in the Golden Age. So, what is the part of the Confluence Age Brahmins? Is it good to keep beard and moustache or not?
Baba: They (i.e. Brahmins) do shave. Here everyone has shaved.
Student: What does *shrimat* say?
Baba (jokingly): *Shrimat* says – Keep some moustache. Maintain the honour of Brahma's beard. When Brahma becomes vice less then you too can shave it clean.

7.50-10.12

जिज्ञासु- बाबा बोलते हैं कि मैं पवित्र तन में नहीं आता हूँ। पतित तन में ही आता हूँ।

बाबा- हाँ, मैं पवित्र तन में आता हूँ।

जिज्ञासु-लेकिन नारायण की आत्मा तो 18 में सम्पूर्ण बन जायेगी ना?

बाबा- नारायण की आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो 108 बच्चे नहीं है? द्वादश लिंग नहीं देखे हैं / सुने हैं? द्वादश ज्योतिर्लिंगम सुने हैं?(जिज्ञासु- सुने हैं) वो किसकी यादगार है?

जिज्ञासु- शिव की यादगार।

बाबा- नहीं, शिव तो मुकर्रर रथ में आता है। ये तो (कोई) कह ही नहीं सकता कि शिव मेरे में आता है। इसका मतलब ये हुआ कि शिव जिसमें प्रवेश करता है वो बाप समान बनता है तो बच्चों में भी प्रवेश करता है। माना बच्चों में बापदादा प्रवेश करते हैं। शिव प्रवेश नहीं करता।

Time: 7.50-10.12
Student: Baba says: I do not come in a pure body. I come only in a sinful body.
Baba – Yes, I come in a pure body.
Student - But the soul of Narayan will become complete in the year (20)18, will it not?
Baba: The soul of Narayan become complete, then, are there not 108 children? Have you not seen or heard about 12 (Shiv)*lings*? Have you heard about twelve *Jyotirlingams*? (Student: I have heard) Whose memorial is it?
Student: The memorial of Shiv.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: No, Shiv comes in a permanent chariot. Nobody can say at all that Shiv comes in him. It means that when the one in whom Shiv enters becomes equal to the Father, then he also enters the children. It means that Bapdada enters children. Shiv does not enter.

जिज्ञासु- बाबा, जो अष्□देव है उनमें भी शिव प्रवेश नहीं करता, उनमें भी बाप और ब्रह्मा प्रवेश करते हैं?

बाबा- फिर तो गॉ□ सर्वव्यापी हो गया।

जिज्ञासु- अष्□देव में भी नहीं? पूछ रहा हूँ बाबा।

बाबा- क्यों पूछ रहे हैं? जब वो एकव्यापी है.... कि सर्वव्यापी है? कि 2-4 व्यापी है? एकव्यापी है। आज तो मुरली में ब्रह्मा के लिए भी कह दिया....। क्या? ब्रह्मा में भी जब मैं आता हूँ तो पहले उस बीज की स्मृति करता हूँ फिर आता हूँ। शिव ज्योतिबिन्दु □ायरेक्□ किसमें आता है पहले? प्रजापिता में आता है। फिर जब प्रवेश करेगा ब्रह्मा में तो किसके थ्रु करता है? पहले इमर्ज करता है बाप को फिर प्रवेश करता है।

जिज्ञासु- कैसे?

बाबा- कैसे? क्यों?

जिज्ञासु- उसको कैसे?

बाबा- इमर्ज करता है। इमर्ज नहीं बुद्धि में कर सकता?

किसीने कहा- मुरली में पॉईं□ आता है ना?

बाबा- हाँ। मैं तुम बच्चों को इमर्ज करता हूँ।

Student: Baba, does Shiv not enter the eight deities; does the Father and Brahma enter them as well?
Baba: Then God will become omnipresent.
Student: [Will He] not even enter the eight deities? I am asking Baba.
Baba: Why are you asking? Is He present in one (*ekvyaapi*) or is He omnipresent (*sarvavyaapi*)? Or is He present in two-four persons? He is present in one. Today, in the murli it was said for Brahma as well ….. What? Even when I come in Brahma, I remember that seed, then I come. In whom does the point of light Shiv come directly first? He comes in Prajapita. Then, when He enters Brahma, through whom does He enter? First He brings into view (*emerge*) the father then he enters.
Student: How?
Baba: How? Why?
Student: How (does He *emerge*) him?
Baba: He emerges. Can't He *emerge* [him] in his intellect?
Someone said: A point comes in the Murli, doesn't it?
Baba: Yes. I *emerge* you children.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

19.00-23.30

जिज्ञासु- बाबा, रुद्राक्ष का इतना महत्व क्यों है? आज भी लोग इतना क्यों पहनते हैं?

बाबा- हाँ। रुद्र अक्ष। क्या? वो मणका है उसमें आँखें दिखाई जाती है। मुख भी दिखाये जाते हैं उसको कहते हैं रुद्राक्ष। रुद्र की आँख है वो। क्या? रुद्र भगवान जो देखते हैं वो किसकी आँखों से देखते हैं? जो भी रुद्रगण है उन रुद्रगणों की आँख से रुद्र देखते हैं। कहते हैं ना, भगवान को हजार हाथ है, हजार आँखें हैं। तो क्या हजार आँखें होती है? हजार आँखें नहीं होती लेकिन जैसे ये आँखें जैसा देखेगी वैसा ही आत्मा को बतायेंगी। ऐसे नहीं होता कि आँख देखे कुछ और और आत्मा रूपी राजा को बताये कुछ और।

Time: 19.00-23.30

Student: Baba, why does *Rudraksh* have so much importance? Why do people wear it so much even today?

Baba: Yes. *Rudra Aks*h. What? It is a bead, eyes are shown on it. Mouth is also shown on it. It is called *Rudraksh*. It is the eye of Rudra. What? Through whose eyes does God Rudra see? Rudra sees through the eyes of all the Rudragan. It is said, God has a thousand arms, thousand eyes, isn't it? So, does He have a thousand eyes? He does not have a thousand eyes, but these eyes will narrate to the soul whatever they see. It is not so that the eyes see something else and tell the king-like soul something else.

ऐसे ही जो रुद्र के मणके हैं, रुद्राक्ष हैं वो आँखें भगवान की आँखें हैं। सच्चा-2 पोतामेल देंगी भगवान को। ये ऐसे करता है, वो वैसे करता है। क्या? उनको कहा जाता है रुद्राक्ष। कितने मणके हैं रुद्रमाला में? 108. ऐसे तो रुद्रगण खास ग्यारह ही दिखाये जाते हैं। कितने? ग्यारह रुद्रगण माने जो असली सूर्यवंशी है, जो ज्यों का त्यों बताने वाले हैं, कुछ भी छिपाने वाले नहीं है वो है ग्यारह और बारहवां स्वयं ही रुद्र। उसकी ग्यारह वो खास आँखें हैं। फिर 108 भी हैं जो रुद्रमाला के 108 मणके दिखाये जाते हैं, उनमें मुख बने हुए हैं। मुख होता है ना ऐसा? तो उसमें मुख बने हुए होते हैं। कोई एक मुख का, कोई दो मुख का, कोई चार मुख का, कोई चौदह-2 मुख का भी रुद्राक्ष होता है। दुनिया में कहते है, तुम दुमुखे हो, दुमुहे हो। साँप भी होता है कोई, दुमुहा होता है।

Similarly, the beads of Rudra, the Rudraksh, those eyes are the eyes of God. They give the true *potamail* to God. This one does like this; that one does like that. What? They are called Rudraksh. How many beads are there in the *Rudramala*? 108. Anyway only eleven *Rudragan* are especially shown. How many? Eleven Rudragan; meaning the true *Suryavanshis*, are those who report [something] to [the Father] as it is; those who do not hide anything are eleven and the twelfth is Rudra Himself. Those eleven are his special eyes. Then there are also the 108 who are shown in the form of 108 beads of Rudramala. There are mouths marked on them. There is a mouth like this, isn't there? So, there are mouths shown on them. There are *Rudraksh* beads with one mouth, two mouths, four mouths, fourteen mouths as well. People in the world say: You are two-faced, double-mouthed. There are some snakes also, which are two mouthed (double-headed).

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- उसको पूँछ नहीं होती ना?

बाबा- पूँछ होती है लेकिन उसको मुख ही.... छः महीने इधर के मुख से और छः महीने दूसरे मुख से काम करता है। तो मुख जो है एक होना अच्छा, एक मुख से बात करना अच्छा या अनेकों मुखों से बात करना अच्छा? एक मुख की बात अच्छी होती है। तो जो एक मुख का मणका है वो रुद्राक्ष का मणका मिलता ही नहीं। बहुत मुश्किल से मिलता है। कहाँ की यादगार? (सभी- संगमयुग की) कैसे?

Student: It does not have a tail, does it?

Baba: It has a tail, but its mouth itself…. For six months it uses one mouth and for the next six months it uses the other mouth. So, is it good to have one mouth, to speak through one mouth or to speak through many mouths? It is good to speak through one mouth. So, the bead of Rudraksh with one mouth is very rare. It can be found with great difficulty. It is a memorial of which time? (Everyone said: Of the Confluence Age). How?

संगमयुग में जो प्रजापिता वाली आत्मा है वो दुनिया वालों को तो बेचारों को मिलती ही नहीं, बेसिक वालों को भी बड़े मुश्किल से मिलती है और जिन बेसिक वालों को मिल जाती है उनमें भी निश्चय-अनिश्चय का चक्र ढ़ेरों को चलता रहता है। कभी मिलती जैसे कभी न मिलती। मिली मिली न मिली बराबर हो गया। मिल गई और जब फाईनल पेपर हुआ, माया की परीक्षा आई और उसमें फेल हो गये, दुनिया में हवा बही, टेलीविजन में, अखबारों में, रेडियो में और उस ग्लानि से प्रभावित हो गये। प्रभावित होने के बाद, बुद्धि में, ये बेकार है सब ऐसे ही। तो मिला कि नहीं मिला? मिला मिला न मिला बराबर हो गया। तो एक मुख का मणका जो है विरल मिलता है, मिलता ही नहीं। उसकी बहुत कीमती होती है और बाकी दुमुहे तो बहुत मिल जाते हैं।

जिज्ञासु- हमको तो मिल गया।

बाबा- देखना अभी परीक्षा होने वाली है।

The people of the world do not find the soul of Prajapita at all in the Confluence Age; those who follow the basic knowledge also find him with a great difficulty and even among those from the Basic knowledge who find him, most of them keep passing through the cycle of faith and faithlessness. Sometimes they find, sometimes they do not find. To have found him or not is one and the same. Suppose they find him and when the final paper takes place, when Maya tests them and if they fail in it, if there was a wave (of defamation) in the world, in television, in newspapers, in the radio and if they were influenced by that defamation, after being influenced through the intellect (if they think) all this is a waste, ; then did they find him or not? To have found him or not is one and the same. So, the bead with one mouth is found very rarely; it is hardly found. It is very costly and as for the rest, we can find many with two mouths.

Student: We have found him.

Baba: [Wait and] see, you are going to be tested now.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

23.36-24.10

जिज्ञासु- बाबा, जो चन्द्रवंशी है सवा दो लाख, जन्म देनेवाले, वो जब आयेंगे तो वो भी भट्ठी करेंगे क्या?

बाबा- चन्द्रवंशी सवा दो लाख विजयमाला के मणके? हाँ?

जिज्ञासु- तो वो भी भट्ठी करेंगे क्या जब वेदांती बहन आयेगी तो?

बाबा- अरे, ए□वांस ज्ञान ही नहीं होगा तो फिर नई सृष्टि का ज्ञान हो जायेगा? (सभी- नहीं) हाँ। ज्ञान तो चाहिए ना? सम्पूर्ण ज्ञान चाहिए अधूरा ज्ञान चाहिए? सम्पूर्ण ज्ञान चाहिए।

Time: 23.36-24.10
Student: Baba, when the two lakh twenty five thousand *Chandravanshis* (those of the moon dynasty) who give birth (the R-K like children), come (to the advance party) will they also undergo bhatti?
Baba: The *chandravanshi* two lakh twenty five thousand beads of *vijaymala*? Hm?
Student: So, will they also undergo *bhatti* when Sister Vedanti comes?
Baba: Arey! When they do not have advance knowledge at all, then will they have the knowledge of the new world? (Everyone said: No) Yes. Knowledge is required, isn't it? Is complete knowledge required or incomplete knowledge required? Complete knowledge is required.

25.15-25.40

जिज्ञासु- बाबा, हम जो पोतामेल देते हैं ना, वो साकार पढ़ता है तो क्या सोचता है?

बाबा- क्या सोचता है? पहले उसको मालूम नहीं है कि ये सब पतित है दुनिया? हाँ? सारी दुनिया पतित है वो उसको नहीं मालूम? अगर नहीं मालूम है तो ज्ञानी है कि अज्ञानी? अज्ञानी हो जाये फिर तो।

Time: 25.15-25.40
Student: Baba, what does the corporeal medium think when he reads the *potamail* that we give (to Shivbaba)?
Baba: What does he think? Does he not know that all these people of the world are sinful? Hm? Does he not know that the entire world is sinful? If he does not know, then is he knowledgeable one or ignorant? Then he will be an ignorant person.

25.43-30.10

जिज्ञासु- बाबा, यज्ञ में ऐसी कौन सी बात बनती है जो अंत समय जो जगन्नाथपुरी का मिसाल दिया है कि दोनो हाथ नहीं माना बाबा का सब साथ छोड़ देते हैं बच्चे? ऐसी स्थिति, यज्ञ में क्या ऐसा संक□ आता है?

Time: 25.43-30.10
Student: Baba, what happens in the *yagya* that in the end as per the example of Jagannathpuri where he does not have both arms; do all the children leave Baba? What circumstance, what crisis comes in the *yagya*?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- अव्वल नम्बर की देवी कौन है और आखिरी नम्बर की देवी कौन है? सतयुग आता है, सतयुग रूपी सवेरा होता है तो पहले-2 कौनसी देवी की पूजा होती है? लक्ष्मी की पूजा होती है ना? वो तो श्रीदेवी है। तो जो श्रीदेवी है वो हो गई लक्ष्मी और तिरुपति में एक दूसरी देवी और दिखाई जाती है। क्या नाम है उसका? पद्मिनी, पद्मावती। पद्मावती नाम क्यों पड़ा? पद्म के ऊपर आसन है। क्या? रहती कीचड़ में है लेकिन बुद्धि कहाँ बैठी हुई है? कमल फूल के समान बुद्धि है। भल कीचड़ में रहती है लेकिन बुद्धि फिर भी ज्ञान की बातों में लगी रहती है। माना उसमें जितना ज्ञान है उतना और कोई देवी में ज्ञान नहीं है सुनने और सुनाने के लिए। लक्ष्मी में भी उतना ज्ञान नहीं है। क्या? लक्ष्मी भी कहाँ से लेती है? वो भी जगतमाता से ज्ञान लेती है। लेकिन अंतर क्या है दोनो में? वो सुनने सुनाने तक सीमित और वो बाँ□ती भी है, धारण भी करती है और धारण करके बाँ□ती भी है। ये अंतर पड़ जाता है।

Baba: Who is the number one *devi* and who is the last *devi*? When the Golden Age arrives, when the Golden Age like morning starts, which *devi* is worshipped first of all? Lakshmi is worshipped, isn't she? So, she is Shridevi. So, Shridevi is Lakshmi and another *devi* is shown in Tirupati. What is her name? Padmini, Padmavati. Why was the name Padmavati given? She is seated on a lotus. What? She does live in murky waters, but still where does the intellect sit? The intellect is like lotus flower. The intellect remains busy in the subject of knowledge. It means that no other *devi* has so much knowledge, for hearing and narrating, as her. Even Lakshmi does not have so much knowledge. What? Where does even Lakshmi obtain (knowledge from)? She too obtains from Jagdamba. But what is the difference between the two? She (*Jagatmata*) remains limited to listening and narrating. And she (*Lakshmi*) also distributes; she inculcates and also distributes it after inculcation. This is the difference.

तो जो पद्मावती है कीचड़ में रहती है और कीचड़ की दुनिया में रहते हुए भी बुद्धि से पवित्र है। क्या? वो महाकाली का पा□ है। विनाश काहे से होता है? पवित्रता से या अपवित्रता से? अपवित्रता से होता है विनाश। देवियों में नम्बरवार देवी है कि एक जैसी है? नम्बरवार है। जो गन्दे लोग दुनिया में माने जाते हैं, चोर, चकार, भंगी, चमार वो किसकी पूजा करते हैं? वो महाकाली की पूजा करते हैं। बाबा ने भी दो प्रकार की देवियाँ बताई। एक शाकाहारी और एक मांसाहारी। जो काली कलकत्ते वाली का मन्दिर है कलकत्ते में, उसमें कोई जाये तो रप□ने का बहुत □र रहता है। चारों तरफ तेल और खून ही बिखरा हुआ रहता है। बात कहाँ की है? ये संगमयुगी खून की बात है, संकल्पों के खून की बात है। विनाश होगा तो चाहे ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में विनाश हो सूक्ष्म रूप से और फिर चाहे बादमें बाहर की दुनिया में विनाश हो, खून खराबा तो होगा कि नहीं होगा? (सभी- होगा) उस खून खराबे की निमित्त असुर संघारनी देवी कौन? जगदम्बा महाकाली। कुछ समझ में आया प्रश्न का उत्तर कि नहीं?

जिज्ञासु- हाँ।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- क्या?

जिज्ञासु- कि विनाश अपवित्रता....

So, Padmavati lives in murky waters and despite living in a world of murky waters, her intellect is pure. What? That is Mahakali's part. How is destruction brought about? Through purity or through impurity? Impurity brings destruction. Are the *devis number wise*[1] or are they all equal? They are *number wise*. Whom do people, who are considered to be dirty in the world, i.e. the thieves, *bhangis*[2], *chamars*[3] (lowermost castes among Hindus) worship? They worship Mahakali. Baba has also described two kinds of *devis*. One is vegetarian and another one is non-vegetarian. If anyone goes to the temple of Kali in Calcutta, there is every chance of his slipping and falling. There is oil and blood spread all over. It is about which time? It is about the Confluence Age blood, about the blood of thoughts. When destruction takes place, whether destruction takes place in the subtle form in the Confluence Age world of Brahmins and whether destruction takes place in the outside world; will bloodshed take place or not? (Everyone said: It will take place) Who is the demon slayer *devi* instrumental for that bloodshed? Jagdamba Mahakali. Did you understand the answer to your question or not?
Student: Yes.
Baba: What?
Student: That impurity brings destruction ……..

बाबा- तुमने जो प्रश्न किया था सो बताओ।

जिज्ञासु- जो बाबा का साथ सब छोड़ देते हैं अंत समय में....

बाबा- हाँ तो अभी नहीं समझ में आया कि महाकाली को भुजायें क्यों दिखाई गई है कमर में? भगवान की जो सहयोगी भुजायें थी उनको का लिया। भगवान तो स्थापना और पालना का काम करेगा या ऐसा काम करेगा जिससे दुनिया दुखी हो जाये? वो सुख का सागर है या दुख का सागर है? सुख का सागर है। तो भगवान की जो सहयोगी बनने वाली भुजायें हैं उनमें जो कम अकल होती है... क्या? उनको काती है। का करके अपनी लज्जा का आवरण ढ़क लेती है।

Baba: Tell me the question that you had raised.
Student: Everyone leaves the company of Baba in the end….
Baba: Yes, so, did you not understand why Mahakali has been shown to have arms around her waist? She cut off the helpful arms of God. Will God perform the task of establishment and sustenance or will He perform a task which makes the world sorrowful? Is He the Ocean of happiness or the Ocean of sorrows? He is the Ocean of happiness. So, the helpful arms of God which are less intelligent….what? She cuts them off. She cuts them and protects her modesty (*lajja ka aavaran*).

[1] According to their capacity
[2] sweepers
[3] cobblers

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

30.12-36.09

जिज्ञासु- बाबा, काली को बहुत लोग बोलते हैं कि जादू□ोना करने के लिए वो देवी का इस्तमाल किया जाता है। तो वो सच होता है क्या?

बाबा- माया बेसिक नॉलेज वालों में जो जड़ कही जाती है वहाँ माया अभी जिन्दा है कि शरीर छोड़ दिया स्थूल? हाँ? शरीर छोड़ दिया। शरीर छोड़ने के बाद वो ज्यादा पावरफुल बन जाती है कि कमजोर रहती है? ज्यादा पावरफुल बन गई। और उस पर भी संदेश में ये बोला माया ने प्रकृति देवी का साथ नहीं, हाथ मिलाए लिया। तो और ज्यादा पावरफुल हो गई। पहले ही धमचक्कर बहुत मचाती थी और अब माया भी साथ में हो गई। प्रकृति भी साथ में हो गई। वो तो पहले से ही झा□ू लिए खड़ी थी। अब क्या हाल होगा? आपका सवाल का जवाब आया? नहीं आया? अरे! आपने सवाल क्या किया अभी?

Time: 30.12-36.09

Student: Baba, many people say about Kali that they take her help to practice black magic (*jadutona*); is it true?

Baba: Is Maya, who is said to be the root [soul] among those who follow the basic knowledge still alive there or has she left her physical body? Hm? She has left her body. After leaving her body, does she become more powerful or does she remain weak? She became more powerful. Moreover, it has been said in the *sandesh* (trance message) that Maya has not combined but joined hands with *Prakriti Devi* (Mother nature). So, she has become even more powerful. As it is she used to create a lot of disturbances and now maya has also joined her. Nature has also joined her. She was already standing with broom in her hands. What will be the condition now? Did you get the answer to your question? Did you not get it? Arey! What question did you raise just now?

जिज्ञासु- नहीं मैंने सवाल ये पूछा था कि बहुत सारे लोग बोलते हैं ना कि वो जादू-□ोना वगैरा करते हैं।

बाबा- हाँ, हाँ जो बिंदु की याद थी वो तो अभी माया कर रही थी। साकार तो उसे पहचान में आया नहीं। लेकिन अभी? अभी उसको साकार रूप में वो देवी आ गई हाथ में उससे हाथ मिलाए लिया। जिसने साकार में सबसे जास्ती साथ किया है। सबसे जास्ति मिलन मेला भगवान के साथ मनाया है तो उसमें कितनी पावर होगी? जो भगवान का साथ सबसे जास्ति लेने वाली हो उसमें तो सबसे जास्ति ताकत आ जाती है। संग का रंग सबसे जास्ति लग गया तो अभी माया तो बहुत पावरफुल हो गई। नहीं समझ में आया? क्या समझ में आया? आपके प्रश्न का सवाल (जवाब) नहीं समझ में आया अभी?

जिज्ञासु- क्या आया?

बाबा- क्या आया? इशारा समझ लिया? क्या समझा बताओ?

जिज्ञासु- .....

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- क्या?
Student: No, I questioned that many people say [they worship her when] they practice black magic, etc….
Baba: Yes, yes, Maya used to remember a point up until now. She did not recognize the corporeal [Father]. But now? Now she has found that *devi* in a corporeal form, she joined hands with the one who has been in the company of the corporeal form [of the Father] more than anyone else. She has enjoyed meeting God more than anyone else. So, how powerful she must be! The one who has had the maximum company of God receives the maximum power. She has been coloured by His company more than anyone else. So, now Maya has become more powerful. Did you not understand? What did you understand? Did you not understand the reply to your question still?
Student: What?
Baba: What? Did you understand the hint? Tell me what you understood.
Student said something.
Baba: What?

जिज्ञासु- जो जादू-□ोना वगैरा होता है ना।
बाबा- हाँ। जो दुनियाँवी शक्तियाँ हैं। वो दुनियाँवी शक्तियाँ तो पहले से ही वो आवाह्न करती थी। मायावी आत्मायें। भगवान के ऊपर तो उनको विश्वास ही नहीं है साकार के ऊपर। तो उन्होंने किसका आसरा लिया हुआ था अभी तक? अरे! सारे ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ जादू-□ोने का ही आधार लेके चल रहे हैं और अंदर से समझे बैठे हैं भगवान कोई चीज़ नहीं है। जोदू-□ोना ये जो ताकत है वो हमारे हाथ में आ गई...। क्योंकि उनका जो मुखिया है वो खुद सूक्ष्म शरीरधारीयों का मुखिया बन गया। तो अगर ये सूक्ष्म शरीरधारी आत्मायें हमारी मुट्ठी में बनी रहेंगी तो जैसे हम जग जीत लेंगे।
जिज्ञासु- ये तो उल□ी बुद्धि हो गई।
Student: The black magic and so on that takes place…
Baba: Yes. The worldly powers… they, the illusive (*mayavi*) souls used to already summon those worldly powers. They do not have faith on God, on the corporeal [form of God] at all. So, whose support had they taken so far? Arey! All the Brahmakumar- kumaris are taking the support of black-magic and they are thinking from within, 'There is no such thing as God. We have the power of black magic with us.' Because their head has himself become the head of subtle-bodied ones. [They think] 'So, if these subtle bodied souls remain under our control, then it is as if we have conquered the world'.
Student: This is an opposite intellect.

बाबा- तो शिव जो है वो सूक्ष्म शरीरधारियों में आता है, सूक्ष्म ब्रह्मा में आता है, सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा में आता है, सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा में आता है या साकार में आता है?
जिज्ञासु- साकार में आता है।
बाबा- शिव किसको प्यार करता है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- साकार को।

बाबा- साकार तनधारियों को प्यार करता है। साकार भले कितने भी पतित हों। वो पतितों को नहीं देखता। क्या? पतितों को पावन बनाना उसका फर्ज है। मैं फर्स्ट क्लास धोबी हूँ। और धोबी कपड़े से अगर घबरा जाए। हे! ये कपड़ा तो बेकार है। बड़ी बदबू आ रही है और फेंक दे कपड़े को। ऐसे कहीं होता है क्या? तो फर्स्ट क्लास धोबी किस बात का?

किसी ने कुछ कहा।

बाबा- हाँ तो बाप तो साकार तन में आता है, साकार मनुष्यों में आता है। सूक्ष्मवतनवासियों में नहीं आता है। क्यों नहीं आता है?

जिज्ञासु- पतित को पावन बनाता है।

Baba: So, does Shiva come in subtle-bodied beings, does He come in subtle Brahma, does He come in subtle bodied Brahma, does He come in subtle world dweller Brahma or does He come in the corporeal one?
Student: He comes in the corporeal one.
Baba: Whom does Shiv love?
Student: The corporeal one.
Baba: He loves the corporeal bodily beings. No matter how much the corporeal one may be sinful. He does not see the sinful ones. What? It is His duty to purify the sinful ones. [He says,] 'I am a first-class washer man.' And if a washer man fears the cloth (thinking), 'Hey! This cloth is useless. It is giving out such a bad odor and if he throws it. Does it happen like this anywhere? Then, will he be called a first-class washer man?
(Someone said something)
Baba: Yes, therefore the Father comes in a corporeal body; He comes in corporeal human beings. He does not come in subtle bodily beings. Why does He not come (in a subtle being)?
Student: He purifies the sinful ones.

बाबा- हाँ। जो पतित हैं वही पावन बनेंगे। सूक्ष्मशरीरधारी तो वो बनते हैं। जो बड़े क्रोधी होते हैं, अहंकारी होते हैं। ज्यादा पाप करते हैं। पाप करते समय उन्हें ध्यान ही नहीं रहता हम क्या करने जा रहे हैं। वो आत्मायें जिनके सिर के ऊपर ज्यादा पाप चढ़ जाते हैं। उन पापों से थोड़े समय के लिए उनको, थोड़े समय के लिए उनको निजात मिले। इसीलिए उनको सूक्ष्म शरीर मिल जाता है।

जिज्ञासु- फिर ब्रहमा को क्या कहेंगे ?

बाबा- सूक्ष्म शरीरधारी।

जिज्ञासु- तो उसमें ये सब गुण हैं?

बाबा- गुण हैं? अरे, अपने को भगवान समझना ये गुण हो गया?

(**जिज्ञासु-**वो एक ही अवगुण है)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- ये एक में तो सबकुछ अवगुण आ गया। गुरुओं में सबसे बड़ा गुरु कौन? जितने गुरु है जो शिवोहम कहकर बैठते रहे उन गुरुओं में बड़े ते बड़ा गुरु कौन हुआ? (सभी- ब्रह्मा बाबा)

Baba: Yes. Only those who are sinful will become pure. Those who are very wrathful, egotist, commit more sins, assume a subtle body. While committing sins they are not at all aware what they are going to do. Those souls, on whom more sins accumulate, get a subtle body to enable them to be free from those sins for some time.
Student: Then what will we call Brahma?
Baba: Subtle bodied.
Student: So, does he have all these virtues?
Baba: Have virtues? Arey! Is considering oneself God a virtue?
Student: That is the only vice.
Baba: All the vices are included in this one thing. Who is the biggest guru among all gurus? Among all the gurus, who take a seat saying *Shivoham* (I am Shiv), among those gurus who is the biggest guru? (Everyone said, Brahma Baba)

जिज्ञासु- लेकिन हम तो कहते हैं कि ब्रह्मा को फॉलो करो।

बाबा- हाँ, तो कौनसे ब्रह्मा को फॉलो करो?

जिज्ञासु- □ायरेक्शन प्रजापिता का मानो....

बाबा- तो ब्रह्मा तो पाँच है। कौनसे ब्रह्मा को फॉलो करो?

जिज्ञासु- प्रजापिता तो शंकर है उसको कैसे करेंगे?

बाबा- नहीं प्रजापिता शंकर नहीं है। शंकर को प्रजापिता नहीं कहेंगे। यज्ञ के आदि में जो स्वरूप था वो प्रजापिता ब्रह्मा था उसने अपना □ाइ□ल दादा लेखराज को दिया। तो दादा लेखराज ने भी तो कोई खराब कर्म नहीं किये। अच्छा ही तो कर्म किया। उन्होने तो अच्छा ही पा□ बजाया। तो कर्मों के आधार पर फॉलो करना तो ब्रह्मा को है लेकिन □ायरेक्शन? □ायरेक्शन बाप का मानना है।

Student: But we say: Follow Brahma.
Baba: Yes, so, which Brahma should we follow?
Student: Obey the direction of Prajapita....
Baba: So, Brahma are five. Which Brahma should you follow?
Student: Prajapita is Shankar. How can we follow him?
Baba: No, Prajapita is not Shankar. Shankar will not be called Prajapita. The personality who was in the beginning of the yagya was Prajapita Brahma. He gave his title/ to Dada Lekhraj. So, Dada Lekhraj also did not perform any bad actions. He performed good actions. He played a good part. So, on the basis of actions we have to follow Brahma, but what about the directions? We have to obey the directions of the Father.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

38.09-39.29

जिज्ञासु- तुलसीदास की पत्नी ने उन्हें प्रेरणा दी इस कारण वो इतने आगे बढ़े, उनकी पत्नी ने ही उन्हें कहा तो उन्होनें सन्यास लिया फिर भी उन्होंने औरतों के प्रति ऐसा क्यों लिखा?

बाबा- क्या?

जिज्ञासु- कि ढ़ोल, गवाँर, शूद्र, पशु, नारी, है ये सब ताड़ना के अधिकारी। उन्होने ऐसा क्यों लिख दिया जबकि पत्नी की प्रेरणा से ही वो इतने आगे बढ़े?

Time: 38.09-39.29

Student: *Tulsidas*[4] made so much progress only because of his wife's inspiration; he renounced (the household life) on being told by his wife; still, why did he write such things about women?

Baba: What?

Student: '*Dhol, ganvaar, shudra, pashu, naari, hai ye sab taarnaa ke adhikaari*.' (A large drum, fools, *Shudras (people belonging to the lowest caste in the Hindu society)*, animals and women are fit to be beaten) Why did he write so, when he made so much progress only on being inspired by his wife?

बाबा- उनके द्वारा जो वाचा बोली जा रही थी वो सात्विक स्टेज में बोली जा रही थी कि तामसी स्टेज में बोली जा रही थी? (किसी ने कहा- तामसी स्टेज में) तुलसीदास जो है वो तामसी दुनिया के कवि है या सात्विक दुनिया के कवि है? सात्विक दुनिया में तो कवि होते ही नहीं। सतोप्रधान दुनिया में कवि होते नहीं, न सतोसामान्य में होते हैं। कब होते हैं? द्वापरयुग जब शुरु होता है तब कवि शुरु होते हैं लेकिन उस द्वापरयुग में भी कवि जो है वो तमोप्रधान नहीं थे। ये तो अभी 500 साल पहले हुए हैं। कौन? कलियुग में तुलसीदास। तो तामसी जो व्यक्ति जो कुछ लिखेगा उसमें कुछ गलत बात लिख सकता है कि नहीं? लिख सकता है।

Baba: Were the words spoken by him being spoken in a pure stage or in a degraded stage? (Someone said: Degraded stage). Is *Tulsidas* a poet of the degraded world or of a pure world? There are no poets at all in the pure world. There are no poets either in the *satopradhan*[5] world or in the *satosamanya*[6] world. When do they exist? Poets come into existence when the Copper Age begins. But even in that Copper Age, the poets were not *tamopradhan*. This one existed only 500 years ago. Who? *Tulsidas* was in the Iron Age. So, can't an impure person write something wrong in his writings? He can.

जिज्ञासु- बाबा, तुलसीदास प्रजापिता की आत्मा....

बाबा- ठीक है तो प्रजापिता की आत्मा क्या तमोप्रधान नहीं बनती है?

सभी- बनती है।

बाबा- देखो।

[4] Tulsidas- a great Hindi poet who wrote Ramcharit Manas in Hindi
[5] consisting in the quality of goodness and purity
[6] Where there is ordinary goodness and purity

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, is Tulsidas the soul of Prajapita.....
Baba: It is correct. So, does the soul of Prajapita not become *tamopradhan*?
Everyone: It becomes.
Baba: Look.

39.32-41.02

जिज्ञासु- बाबा, अष्ट देव के पाप भस्म होते हैं योगबल से बाकि सबके नहीं होते योगबल से पापकर्म ...?

बाबा- योग माना? योग माना याद। याद उसी की आती है जिससे प्यार होता है। जितना प्यार होगा उतनी जास्ती याद होगी। तो जिनको जास्ती प्यार है तो जास्ती सहयोग करेंगे, कम सहयोग करेंगे? प्यार के पीछे आदमी सबकुछ अर्पण कर देता है। पागलपन सवार हो जाता है। तो आठ जो है जब इतनी सेवा में मस्त रहेंगे तो उनको पावर तो बहुत मिलती है। इतनी पावर जगदम्बा को नहीं मिलती है। क्यों? उसने तो बाप का बहुत संग किया लेकिन याद का संग नहीं किया, प्यार नहीं। प्यार पूर्वक जो याद की जाती है वो कुछ और होती है। याद तो रावण भी करता था। किसको? शिव को भी करता था, दुश्मन राम को भी करता था, बहुत याद आती थी उसको लेकिन प्यारपूर्वक याद आती थी या ईर्ष्यापूर्वक याद आती थी? ईर्ष्या द्वेष के आधार पर याद आती थी। तो अंतर पड़ेगा ना?

Time: 39.32-41.02
Student: Baba, sins of the eight deities are destroyed through the power of yog; don't the sins of everyone burn through the power of yog?
Baba: What is meant by *yog*? *Yog* means remembrance. We remember only the one whom we love. The more the love, the more the remembrance. So, those who love more, will they cooperate more or cooperate less? A person sacrifices everything behind love. He is overcome by madness [in love] . So, when the eight remain so busy in service, they receive a lot of power. Jagdamba does not receive so much power. Why? She was in the Father's company a lot, but she did not remain in company through remembrance, through love. Remembrance with love is something different. Even Ravan used to remember. Whom? He used to remember Shiva as well as his enemy Ram. He used to remember [Ram] a lot, but did he used to remember with love or because of jealousy? He used to remember on the basis of malice and jealousy. So, there will be a difference, will there not?

41.02-42.30

जिज्ञासु- बाबा, 5000 साल का अनादि ये ड्रामा हूबहू घूमते रहता है। हूबहू का मतलब चैतन्य आत्माओं के प्रति भी है या निर्जीव वस्तुओं के प्रति भी है?

बाबा- दुनिया की हर अणु, हर कण, दुनिया की हर आत्मा.... कण और अणु तो फिर भी स्थूल होता है लेकिन आत्मा तो उससे भी सूक्ष्म है। जब आत्मा ही पूरा अपना साईकल लगाके फिर उसी जगह पर पहुँचेगी तो अणु-2 नहीं पहुँचेगा?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 41.02-42.30
Student: Baba, this eternal drama of 5000 years keeps rotating as it is (*hubahu*). Does 'as it is' refer to the living souls as well as the non-living things?
Baba: Every atom, every molecule, every soul of the world....atom and molecule are physical to some extent, but the soul is subtler than that. When the soul itself reaches the same place after completing its cycle, then will every atom not reach (its own place)?

जिज्ञासु- समझो ये सेकेण्ड जो निर्जीव वस्तु की स्थिति है दुनिया में...
बाबा- हाँ, इसी टाईम पर जब आयेगी तो ये वो ही स्थिति हो जायेगी। जो पत्थर अभी हम देख रहे हैं, करोड़ों अणुओं से मिलकरके जो पत्थर अभी बना है वो 5000 वर्ष के बाद जब इस टाईम आयेगा तो वो ही अणु मिलकरके वो ही पत्थर फिर दिखाई पड़ेगा।
जिज्ञासु- और उसी जगह वो पायेगा?
बाबा- अरे, शरीर के जो अणु-2 है वो ज्यों के त्यों आ जाते हैं। शरीर में तो अणु है ना इकट्ठे हुए?
जिज्ञासु- शरीर की, आत्मा की बात तो ड्रामा अनुसार है लेकिन ये निर्जीव वस्तु का मुझे मालूम नहीं....
बाबा- ये शरीर निर्जीव है कि जीव है? इसमें से आत्मा निकल जाये तो ये शरीर क्या होगा? (सभी- निर्जीव है) निर्जीव है लेकिन अणु तो होंगे न उसमें? (जिज्ञासु- हाँ)
Student: Suppose at this second, a non-living thing is in whatever condition in the world…
Baba: Yes, when it reaches the same time (in the next *kalpa*), it will reach the same condition. A stone, which is made up of millions of atoms that we are seeing now, after 5000 years, when it reaches this time, the same atoms will combine to form the same stone.
Student: And will it reach the same place?
Baba: Arey! Every atom of the body come back [to its place] as they were. There is a collection of atoms in the body, isn't there?
Student: As regards the body and the soul, it is according to the drama, but I don't know about this non-living thing....
Baba: Is this body non-living or living? If the soul goes out of it, what will this body become? (Everyone said: it is non-living). It is non-living, but it does consist of atoms, does it not? (Student: Yes).

42.30-47.00

जिज्ञासु- बाबा, आज की मुरली में बताया कि नाभि से कनेक्शन कट होता है बच्चे का तो फिर उसे बाहर से अन्न मिलता है । यदि कृष्ण का कनेक्शन कट हुआ तो उसे बाहर से अन्न कैसे मिलेगा, इसका बेहद का अर्थ क्या हुआ?
बाबा- अभी संग का रंग लग रहा है कि नहीं दुनियावालों का? (सभी-लग रहा है) हं। राम कृष्ण की आत्माओं को या कोई भी मनुष्य आत्मा को संग का रंग लगता है या नहीं लगता है? लगता

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

है। एक शिव है जिसको संग का रंग नहीं लगता । तो ऐसा भी □ाइम कोई आयेगा कि वो आत्मा सम्पूर्ण नष्□ोमोहा-स्मृतिलब्धा बने। आयेगा या नहीं? (सभी-आयेगा) जब सम्पूर्ण नष्□ोमोहा बने तो उसका 500 करोड़ की जो पतित दुनिया है, उसके साथ बुद्धियोग रहेगा? (सभी-नहीं रहेगा) अभी तो आता है। अभी संग का रंग लगता है। संग का रंग लगता है तो कुछ अवस्था नीचे उपर होती होगी कि एक ही जैसी अवस्था रहती होगी? जरूर संग का रंग लगता है।

Student: Baba, in today's murli it was said that when the child's connection is cut through the umbilicus it receives food from outside. If Krishna's connection is cut, how will he receive food from outside?

Baba: Now he is being colored by the company of the worldly people or not? (Everyone said: he is). Hum. The souls of Ram and Krishna or any human soul is colored by the company or not? Shiva is the only one who is not colored by the company. So a time will come when that soul (of Ram/Krishna) will attain the stage of conquering attachment and remaining in the remembrance (*nashtomoha smritilabdha*) of the Father. Will it come or not? (Everyone said it will.) When he becomes completely victorious over attachment, will his intellect be connected with the impure world of 5 billion [souls]? (Everyone said: it won't). Now it does. Now he is colored by the company. When he is colored by the company, will his stage go up and down to some extent or will it stay constant? Certainly he is colored by the company.

सिर्फ रामवाली आत्मा की ही बात नहीं, कृष्णवाली आत्मा की भी यही बात है, सभी आत्माओं की यही बात है – संग का रंग लगता है तो अवस्था नीचे आती है। और जब याद अच्छी आती है तो याद (अवस्था) बढ़िया भी हो जाती है। तो एक ऐसी भी स्□ेज आनी है उस कृष्ण बचचे की कि जो भी 16000 नसे नाड़ियों से उनको... 16000 नसे-नाड़ियों में तो सब तरह की है। कोई तो जन्म जन्मांतर दास-दासी बननेवालियाँ भी है। □ेर के □ेर है, कि थोड़ी है? □ेर के □ेर दास दासियाँ बनेंगे। ऐसे कर्म कर रही है की उनको जन्म जन्मांतर दास दासी ज्यादा बनना पड़ता है और प्रिन्स प्रिन्सेस एकाद जन्म में बन जायेंगी। बनेंगी या नहीं बनेंगी? (सभी-हाँ बनेंगी)

It is not just about the soul of Ram, it is the same with the soul of Krishna; it is the same with all the [other] souls. When they are colored by the company, their stage degrades. And when they remember very nicely, their remembrance (stage) also becomes good. That child Krishna has to reach such a stage too that the [blood that reaches him] through the 16000 blood vessels… among the 16000 blood vessels, there are different types. There are some that become servants for many births. There are so many of them, or are there a few? So many will become servants. They are doing such deeds that they will have to become servants to a greater extent and they will become prince princess in one or two births. Will they or won't they? (Everyone said: they will.)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

तो ऐसी □र के □र नसे नाि□यों का संपर्क संसर्ग उस कृष्ण की आत्मा से हो रहा है । तो संग का रंग लगता है या नही लगता है? लगता है। वो खून आ रहा है उसके अंदर। इसलिए प्रत्यक्षता रुकी हुई है। किसलिए रुकी हुई है? वो प्रत्यक्षता रुकी हुई है।और जब उन नसो नाि□यों से खून आना बंद हो जायेगा और सिर्फ एक शिव की ही याद रह जायेगी... क्या? शिव की याद रह जाये और जो शुद्ध नसे नाि□यॉं हैं...अरे नसे नाि□यॉं भी तो दो तरह के हैं- एक गंदा खून बहानेवाली और एक शुद्ध खून बहानेवाली। तो शुद्ध खून बहानेवाली जो 8 हज़ार नसे नाि□यॉं हैं, उनकी जब शक्ति लगातार आने लगेगी और अशुद्ध खून बहानेवालों का जो संपर्क संसर्ग है, वो क□ हो जायेगा। तो फिर स्थिति कैसी बनेगी? अच्छी बनेगी न । प्रत्यक्षता होगी या नहीं होगी? (सभी-होगी।) अव्यक्त स्□ज लगातार दिखाई पड़ेगी या नहीं पड़ेगी ? (सभी-पड़ेगी)और अव्यक्त वाणी में तो बोला हुआ है- तुम्हारी अव्यक्त स्□ज ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी।

So, that soul of Krishna is in connection and contact with so many blood vessels like this. So is he colored by [their] company or not? He is. That blood is running into him. For this reason the revelation is pending. Why is it pending? The revelation is pending. And when blood stops flowing [into him] from those blood vessels and the remembrance of only one Shiva remains … what? Shiva [alone] is remembered and the blood vessels that are pure … Arey! The blood vessels are also of two types: one that carry impure blood and the other that carry pure blood. So the 8000 blood vessels that carry pure blood, when their power continuously reaches [him] and the connection with those carrying impure blood is cut, then what will his stage be like? It will be good, won't it? He will be revealed or not? (Everyone said: he will.) His *avyakt* stage will be constantly visible or not? (Everyone said: it will.) Moreover, it has been said in the *avyakt* vani: Your *avyakt* stage will itself reveal the Father.

क्या? तुम बच्चों की जो नम्बरवार अव्यक्त स्□ज बनेगी, जो ट्रांस्परें□ चेहरा बनेगा वो ट्रांस्परें□ चेहरा ही... जैसे क्रैस□ को प्रत्यक्ष कर देता है संसार मे, बुद्ध को प्रत्यक्ष कर देता है..., आत्माएँ उनकी तरफ आकर्षित होती है कि नही? ...गुरु नानक को प्रत्यक्ष कर देता है । ऐसे ही, वो तो थे सिर्फ धर्मपिताएँ। और यहॉं तो कौन प्रत्यक्ष होनेवाला है? बापों का भी बाप प्रत्यक्ष होनेवाला है। तो कितने ट्रांस्परें□ स्□ज बनी हुई होगी! वो स्थिती को देखते ही लोगों की अवस्था, संग का रंग चढ़ जायेगा। इसीलिए बताया कि जैसी नसे नाि□यों का संपर्क संसर्ग होता है वैसी-2 कृष्ण बच्चे की स्थिति बनती है। अभी जो नसे नाि□यॉं संसर्ग सम्पर्क मे आ रही है वो जन्म जन्मांतर पतित बननेवाले राजाएँ हैं या जन्म जन्मांतर पावन बननेवाली रानियॉं हैं?

जिज्ञासु-पतित राजाएँ है।

What? The *avyakt* stage that you children will attain according to your capacity, your faces that will become transparent, those transparent faces themselves will… just like Christ is revealed in the world, just like Buddha is revealed…, souls become attracted towards them, don't they?... just like Guru Nanak is revealed, similarly…, they were only religious fathers and here who is the one who is going to be revealed? It is the Father of the fathers who is going to be revealed. So what a transparent stage it will be! Just by seeing that stage, the state of the people will…

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

they will be colored by the company. That is why it was said that child Krishna will attain a stage according to the blood vessels that come in his connection and contact. The blood vessels that are coming in his connection at present, are they the kings who will become impure for many births or are they the queens who will remain pure for many births?
Student: They are the impure kings.

बाबा-अभी रुद्रमाला के मणके हैं ।(किसीने कुछ कहा।) अरे! जन्म जन्मांतर इनका गंदा खून रहा है कि... जो संकल्प चले हैं राजाओं के वो देह के संकल्प चले हैं, अनेक रानियों के संकल्प चले हैं, अनेक देवों के संकल्प चले हैं या एक के प्रति संकल्प चले हैं? अनेकों के प्रति संकल्प चले हैं।
जिज्ञासु- शुद्ध बनेंगे न।
बाबा- शुद्ध तो बनना है ना। बाप आया हुआ है। वो तो मार पी□के ले जायेगा। धोबी है न, स□के तो लगायेगा।

Baba: They are the beads of the *Rudramala* now. (Someone said something) Arey! Have they had impure blood for many births or… the thoughts that the kings have had, were they thoughts of the body, were they thoughts of many queens, were they thoughts of many deities or did they have thoughts of the One? They had thoughts of many.
Student: They will become pure, won't they?
Baba: They have to become pure, haven't they? The Father has come. He will beat them and then take them. He is a washer man, isn't he? He will indeed give a thrashing.

47.35-48.09

जिज्ञासु- बाबा, आजकल राशि अनुसार वो अंगूठी पहनने का बहुत बोल-बाला है कि कुछ बीमारी हो गया तो किस-किस को फर्क भी पड़ गया है। उसका रहस्य क्या है? वो राशि अनुसार जो पाँच रत्न पहनते हैं, हीरा पहनते हैं।
बाबा- भावना का फल भाड़ा मिल जाता है। बाकी पत्थर को पहनने से कोई असर नहीं होता है। किसी की भावना होती है तो उस मूर्ति के आधार पर उसको साक्षात्कार भी हो जाता है, तो क्या वो मूर्ति भगवान हो जाती है? (सभी- नहीं) तो ऐसे ही ये आठ रत्नों की बात है।

Time: 47.35-48.09
Student: Baba, nowadays, the trend of wearing a ring as per the zodiac signs is very popular. Some people have benefited (by wearing such rings) while suffering from diseases. What is its secret? They wear five gems, diamond as per their zodiac sign.
Baba: They get returns as per their feelings. As for the rest there will be no effect on wearing a stone, etc. If someone has faith, then, on the basis of that idol, they have visions; so, does that idol become God? (Everyone said: No) So, similar is the case with these eight gems.

49.45- 01.02.20

जिज्ञासु- बाबा, कहते हैं कि मैं पतित से पतित आत्मा के अंदर प्रवेश करता हूँ। तो पतित से पतित आत्मा राम वाली सोल कब हुई थी? उसमें प्रवेश कैसा किया?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- अच्छा, दुनिया जो है अभी पतित बनती जा रही है या पावन बनती जा रही है? (सभी- पतित) इन्हीं को जवाब देने दो ना। दुनिया अभी पतित बनती जा रही है या पावन बनती जा रही है? हाँ? दुनिया अभी किधर जा रही है? ज्यादा पतित हो रही है या भगवान के आने से कम पतित हो रही है? दुनिया अभी ज्यादा पतित हो रही है या कम पतित हो रही है?

जिज्ञासु- कम पतित हो रही है।

Time: 49.45-01.02.20

Student: Baba says: I enter in the most sinful soul. So, when was the soul of Ram the most sinful one? How did He enter him?

Baba: OK, is the world becoming sinful or pure? (Everyone said: sinful) Let him reply, won't you? Is the world now becoming sinful or pure? Hm? Where is the world heading now? Is it becoming more sinful or is it becoming less sinful after the arrival of God? Is the world becoming more sinful or less sinful at present?

Student: It is becoming less sinful.

बाबा- कम पतित हो रही है? भगवान के आने से फर्क पड़ गया? ... दुनिया जो है जास्ती पतित होती जा रही है। है ना? (सभी- हाँ) अच्छा और दुनिया का बीज कौन है? प्रजापिता। और अव्यक्त वाणी में बोला, पाप में पाप बढ़ाने का रहम करने आया हूँ। तो वो कौन? शिव आया है पाप में पाप बढ़ाने का .... शिव पाप करता है? (सभी- नहीं) कौन करता है फिर? (सभी-राम वाली सोल) राम वाली सोल के द्वारा पाप होता है। वो पापात्मा और वो? (सभी- पुण्यात्मा) पुण्यात्मा भी नहीं कहेंगे उसको। वो तो सदा शिव है। न पुण्यात्मा, न पापात्मा। जो पुण्यात्मा बने वो पापात्मा भी बने। तो शिव जो है जिसमें प्रवेश है वो शिव उसके द्वारा अच्छे काम करा रहा है और जो राम की आत्मा है वो तमोप्रधान है, सतोप्रधान है? तमोप्रधान आत्मा है। तमोप्रधान आत्मा क्या कर रही है? तमोप्रधान आत्मा को क्या रग लगी रहेगी? (सभी- पाप में पाप बढ़ाने की) इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला, बाप पाप में पाप बढ़ाने का रहम करने आये हैं। तुम बच्चे इतना पाप नहीं कर सकेंगे जो दुनिया खत्म हो जाये, अति का अंत हो जाये। दुनिया में पापों की अति हो जाये वो काम तुम बच्चों का नहीं है, नहीं कर पायेंगे। बाप में इतनी ताकत है कि पापों की अति करके अंत कर देगा इस दुनिया का। इसलिए ये रहम हो रहा है। पाप की दुनिया बढ़ रही है।

Baba: Is it becoming less sinful? Has the arrival of God made a difference? … The world is becoming more sinful. Is it not? (Everyone said: Yes) OK and who is the seed of the world? Prajapita. And it has been said in an Avyakta Vani that I have come to show the mercy of increasing the sins within the sins. So, who is that one? Has Shiva come to increase the sins within the sins... Does Shiva commit sins? (Everyone said: No) Then who commits sins? (Everyone said: the soul of Ram) Sins are committed by the soul of Ram. He is the sinful soul and He? (Everyone said: A noble soul) He will not be called a noble soul either. He is *Sadaa Shiva*. He is neither a noble soul nor a sinful soul. The one who becomes a noble soul becomes a sinful soul as well. So, the one in whom Shiva has entered, Shiva is making him perform noble

tasks and the soul of Ram, is he *tamopradhan* or *satopradhan*? He is a *tamopradhan* soul. What is the *tamopradhan* soul doing? What will the *tamopradhan* soul keep thinking about? (Everyone said: To increase sins) This is why it has been said in an *Avyakta Vani* that the Father has come to show the mercy of increasing the sins within sins. You children will not be able to commit so many sins as to bring about the end of the world, to end the extremity (of sins). The task of bringing about an end to the sins of the world is not within the capability of you children, you will not be able to do that. The Father has so much power that he will take the sins to an extreme level and then end this world. This is why this mercy is being shown. Sins are increasing in the world[7].

तो बीज... ये सारी बातें जो 2500 साल पहले वेद, शास्त्र बने थे उनमें भी ये लिखी हुई है। ऋग्वेद में एक ऋचा आई है, - द्वा सुपर्णा सुयुजा सखाया समानम वृक्षम अभिशस्व जाते। ये दुनिया एक वृक्ष है इस वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हुए हैं। एक पक्षी अभोक्ता है और एक पक्षी भोक्ता है। एक है 100% अभोक्ता और एक है 100% भोक्ता। एक है भोगी और एक है अभोगी। कहाँ की बात है? अब इस संगमयुग में है कोई एक साकार शरीर जिसमें दो आत्मायें काम कर रही हैं। एक आत्मा है सदा शिव, सदैव कल्याणकारी। अभी ये देखने वालों के ऊपर है कि देखने वाले किसको देखते हैं, किसको फॉलो करते हैं? बाबा बच्चों से पूछते थे, किसके गोद में आये हो? ब्रह्मा की गोद में आये हो या शिवबाबा की गोद में आये हो? अब जिनको ये स्मृति थी कि हम ब्रह्मा की गोद में आये हैं, बाबा बड़े चिकने, चुपड़े, गोरे, चिठ्ठे हैं, है न? बहुत अच्छा लगता है.... (किसीने कहा- फेल हो गये) तो ... नहीं, फेल नहीं हो गये। उनके ऊपर वैसा ही संग का रंग चढ़ता है देहधारी का और जिनकी बुद्धि में ये बैठा हुआ है कि हम शिवबाबा की गोद में आये हैं तो उनको संग का रंग भी श्रेष्ठ चढ़ता है। इसलिए भावना फल देती है, अपनी भावना अपने को फल देती है। ये ज्ञान है, ज्ञान के आधार पर जिन्होंने पहचान लिया कि पतित तन में कौन आया हुआ है? पावन आया हुआ है। तो किसको देखना चाहिए? (सभी- पावन को) हमें लेना देना किससे हैं? (सभी- पावन से)

So, seed... All these things have also been written in the Vedas and scriptures which were written 2500 years ago. There is a *Richa*[8] in Rigved: *Dwa suparna suyuja sakhaya samaanam vriksham abhishaswa jaate*. This world is a tree. Two birds are sitting on this tree. One bird is *abhokta* (one who does not enjoy any pleasure). And another bird is *bhokta* (pleasure-seeker). One is 100% *abhokta* and the other is 100% *bhokta*. One is *bhogi* and the other is *abhogi*. It is about which time? There is a corporeal body in this Confluence Age in which two souls are working. One soul is *SadaaShiv*, always benevolent. Well, it depends upon the observers, whom they see, whom they follow. Baba used to ask children: whose lap have you come into? Have you come into the lap of Brahma or into the lap of Shivbaba? Well those who thought that they have come into the lap of Brahma and that Baba is very charming, fail, isn't he? (And they thought,) 'We like him a lot...' (Someone said: They failed) So... No, they did not fail. They are

[7] Lit.: the sinful world is expanding

[8] A verse

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

coloured by the company of the bodily being accordingly and those in whose intellect it sits that they have come into Shivbaba's lap; they are coloured by a righteous company too. This is why the feelings bear fruit (accordingly). Our feelings give us fruits. This is knowledge; those who have recognized on the basis of knowledge … who has come in the sinful body? The pure one has come. So, whom should we see? (Everyone said: the pure one). With whom should we give and take something? (Everyone said: with the pure one).

जिज्ञासु- बाबा के पतित तन में आया शिव।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- लेकिन शिव के संग के रंग से पावन बन गया ना वो?

बाबा- तो नहीं आना चाहिए। भागो यहाँ से।

जिज्ञासु- अभी तो पूरा बन गया ना?

बाबा- पूरा पावन बन गया ना? पूरा पावन बन गया तो भाग जाना चाहिए शिव को।

जिज्ञासु- नहीं-2 जब तक ये सृष्टि चलती रहेगी।.....

बाबा- पतित तन में आता है या पावन तन में आता हूँ? बड़े ते बड़े कामी काँ में आता है या बड़े ते बड़े फूल में आता है? (सभी- काँ में आते हैं) नाम ही है बड़े ते बड़ा काँ। (किसीने कहा- बबुलनाथ) बबुलनाथ (हँसते हुए) छो-मो काँ नहीं। बड़े ते बड़ा काँ। फिर? तो इस भाई ने जो प्रश्न किया वो प्रश्न समझे? क्या प्रश्न किया?

किसीने कहा- पतित से पतित कब बनता है?

बाबा- उनसे कहो एक बार फिर प्रश्न दौहराये।

Student: Baba, Shiva entered a sinful body.
Baba: Yes.
Student: But he became pure in the company of Shiva, did he not?
Baba: So, He should not come. Run away from here.
Student: Now he has become complete, hasn't he?
Baba: He has become completely pure, hasn't he?! If he has become completely pure, then Shiva should run away.
Student: No, no. Until this world exists.....
Baba: Does He come in a sinful body, or do I come in a pure body? Does He come in a biggest lustful thorn or does He come in the biggest flower? (Everyone said: He comes in a thorn) The name itself is 'the biggest thorn'. (Someone said: Babulnath[9]) Babulnath (Laughingly) He is not a small thorn. He is the biggest thorn. Then? So, did you understand the question raised by this brother? What was the question that he raised?
Someone said: When does he become the most sinful one?
Baba: Ask him to repeat his question.

जिज्ञासु- मैंने ये पूछा था कि बाबा कहते हैं, मैं पतित से पतित आत्माओं में प्रवेश करता हूँ।

[9] The controller of thorns like that of Acacia.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- आत्मा**<u>ओं</u>** नहीं। पतित से पतित तन में प्रवेश करता हूँ। पावन बनाने के लिए बड़े ते बड़े कामी काँ में प्रवेश करता हूँ। उसको बड़े ते बड़ा फूल बनाने के लिए।

जिज्ञासु- आत्मा में प्रवेश नहीं करती तन में प्रवेश करती है।

बाबा- वो आत्मा उसी तन में होती है। जो दुनिया की सबसे पतित आत्मा है, जो तुलसीदास ने भी लिखा है, मैं पतितन को राजा। तुलसीदासजी को ये फीलिंग आई। अपने अपने कर्म करते हैं ना, तो कर्मों से फीलिंग तो आती है? तो उनको ये फीलिंग आती थी। क्या? मैं पतितन को राजा। दुनिया में सब पतित है, उनका राजा कौन है? मैं राजा हूँ। वो ही बाबा कहते हैं।

जिज्ञासु- वो ही पा प्रजापिता का होगा?

बाबा- बिल्कुल। अब राजाराम की समझ में आ गई।

Student: I had asked that Baba says, 'I enter the most sinful souls'.
Baba: Not souls. I enter the most sinful body. In order to purify [the world], I enter the biggest lustful thorn, to make him the biggest flower.
Student: He does not enter the soul, but the body.
Baba: That soul is present in that body. The most sinful soul of the world; even Tulsidas has written: I am the king of the sinful ones. Tulsidas*ji* had this feeling. We perform our own actions, don't we? So, we have feelings due to those actions. So, he used to have this feeling. What? I am a king of the sinful ones. Everyone is sinful in the world; who is their king? I am the king. That is what Baba says.
Student: That part will be of Prajapita.
Baba: Certainly. Now (brother) Rajaram has understood.

किसीने कहा- मुरली में ये पॉई आया है ना कि नई दुनिया मेरी है तो पुरानी दुनिया भी मेरी....

बाबा- देखो!

जिज्ञासु- लेकिन वो पाप क्यों करेगा? अभी तो उसको शिव है ना साकार में संग का रंग लगाने के लिए?

बाबा- हाँ वो तो मस्त है। जो भी अच्छा काम होगा वो शिवबाबा करेगा। अच्छा काम कौन करेगा? (सभी- शिवबाबा) जो सेवा का अच्छे से अच्छा काम है वो कौन करता है? बापदादा करते हैं। तो उसका उजूरा किसको मिलेगा? तनधारी को मिलेगा या शिव को मिलेगा या कृष्ण को मिलेगा? तनधारी को मिलेगा।

Someone said: There is a point in the Murli that if the new world is mine, is the old world not mine?
Baba: Look!
Student: But why will he commit a sin? Now Shiva is present in corporeal form to color him with His company.
Baba: Yes, he is carefree. Whatever good task is performed will be done by Shivbaba. Who will perform good tasks? (Everyone said: Shivbaba) Who performs the best tasks of service?

Bapdada. So, who will get the returns for that? Will the bodily being get [the returns] or will Shiv get [the returns] or will Krishna get [the returns]? The bodily being will get [the returns].

जिज्ञासु- फिर पाप में पाप क्यों बढ़ायेगा?

बाबा- वो खुद की आत्मा की बात है।

जिज्ञासु- खुद में पाप बढ़ा रहा है?

बाबा- जो खुद की आत्मा है वो महापापी है और जो प्रवेश करने वाली आत्मा है, सुप्रीम सोल और कृष्ण वो सेवा का काम करा रही है। (किसीने कहा- आँ?) आँ क्या?

Student: Then why will he increase the sins?
Baba: It is about his own soul.
Student: Is he increasing his own sins?
Baba: His own soul is the most sinful one and the soul that enters, i.e. the Supreme Soul and Krishna are enabling him to do service. (Someone said *Aan*?) What *aan*?

जिज्ञासु- राम और कृष्ण सेवा का काम कर रही है?

बाबा- आप किसको देखते हैं?

जिज्ञासु- बापदादा को।

बाबा- आप तो बापदादा को देखते हो ना? जब बाप कहते हैं तो आपके बुद्धि में सदा शिव आता है या राम आता है? (सभी- सदा शिव) बस खत्म बात हो गई। अरे, भक्तिमार्ग में जड़ मूर्तियों में भगवान को देखते रहे, पत्थर में भगवान को देखते रहे। यहाँ पत्थर की मूर्ति नहीं है। (सभी- चैतन्य) नहीं, है तो चैतन्य लेकिन कलियुग में आकरके पत्थर का लिंग क्यों बनाते हैं? कोई बात है जरूर ऐसी। क्या? कोई बात ऐसी जरूर है जिस बात में वो पत्थर बुद्धि है। (किसीने कहा- राम वाली आत्मा) हाँ, राम वाली आत्मा।

Student: Are the souls of Ram and Krishna doing service?
Baba: Whom do you see?
Student: Bapdada.
Baba: You see Bapdada, don't you? When you utter the word '*Bap*' do you think of *Sadaa Shiv* or Ram? (Everyone said: *Sadaa Shiv*) That ends the argument. Arey! You have been seeing God in non-living idols in the path of *bhakti*; you have been seeing God in stones. Here it is not a stone idol. (Everyone said: living) No, it is no doubt a living thing, but after the commencement of the Iron Age, why do they make a stone ling? There is certainly something. What? There is certainly some aspect in which his intellect is like stone. (Someone said: the Soul of Ram) Yes, the soul of Ram.

जिज्ञासु- वो पापों में पाप बढ़ाने का काम करता है ना?

बाबा- बस।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- क्यों करेगा बाबा वो?

बाबा- बच्चे कर ही नहीं पा रहे हैं।

जिज्ञासु- विनाश करने के लिए?

बाबा- हाँ, दुनिया जो है, जो इतनी दुखदाई दुनिया है उसमें अति लाने का काम जो है वो बच्चों का काम नहीं है, बच्चे नहीं कर पायेंगे। ये बाप का ही काम है। बच्चे.... बच्चे समझते हैं, हम विकारी है। बाप कहते हैं, बच्चे तुम्हारा बाप आया हुआ है।

जिज्ञासु- वो विकारों को खत्म करेगा ना?

बाबा- अरे, खत्म करने वाला ऊपर वाला है कि नीचे वाला है? खत्म करने वाला कौन है? शिवबाबा।

जिज्ञासु- तो ऊपर वाला भी नीचे वाले में हैं ना अभी?

बाबा- हाँ है। लेकिन हम किसको देखते हैं?

जिज्ञासु- कुछ कहा।

Student: He performs the task of increasing the sins, doesn't he?
Baba: That is all.
Student: Why will he do Baba?
Baba: Children are not able to do that.
Student: To bring destruction?
Baba: Yes, the world is so sorrowful; to take it to the extreme level is not the task of the children. Children will not be able to do that. This is the task of only the Father. Children....Children feel that they are vicious. The Father says: Children, your Father has come.
Student: He will end the vices, will he not?
Baba: Arey, the one who ends (the vices) is the one above or the one below? Who brings ends (the vices)? Shivbaba.
Student; So, now the one above is also in the one below, isn't He?
Baba: Yes, He is. But whom do we see?
Student said something.

बाबा- अभी आत्मायें दो है, एक भोगने वाली और एक है अभोक्ता। तो जो दुख भोगने वाली है.... दुख की फीलिंग किसको आती होगी? राम वाली आत्मा दुख भोगे। सुख भी अगर भोगे वो सुख भी अभी स्वर्ग के सुख भोगेगा या नर्क के सुख भोगेगा?

जिज्ञासु- स्वर्ग के सुख।

बाबा- अभी इस समय राम वाली आत्मा अगर सुख भी भोगती होगी तो स्वर्ग के सुख भोगती होगी या नर्क के सुख भोगती होगी? पतित दुनिया में सब पतित होते हैं। जहाँ स्वर्ग होता है वहाँ नर्क नहीं होता है, जहाँ नर्क होता है वहाँ स्वर्ग नहीं होता है।

जिज्ञासु- अभी किधर स्वर्ग है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- अभी आत्मा में स्वर्ग हो सकता है। मन-बुद्धि ज्ञान की पराकाष्ठा से ऐसी बनाय सकते हैं कि हमें दुख अनुभव न हो, हम दुख की बातों में भी सुख ढूंढ ले। जेल में पड़े हुए हों तो भी मन भी अनुभव करे कि हम जितने सुखी हैं दुनिया में इतना कोई नहीं है। और जो संगी साथी हैं साथ में रहने वाले जेली, वो भी अनुभव करें, अरे, कुछ बात है जरूर। ये इतन प्रसन्न रहता है, इतने उमंग उत्साह में रहता है, ये क्या चक्कर है?

Baba: Now there are two souls: one is a pleasure seeker (*bhogi*) and one is non-pleasure seeker (*abhokta*). So, the one who experiences sorrows….who gets the feelings of sorrow? The soul of Ram will experience sorrows. Even if he experiences pleasure, will he now experience the pleasure of heaven or the pleasure of hell?
Student: The pleasures of heaven.
Baba: Now, at this time, even if the soul of Ram experiences pleasures, will he experience the pleasures of heaven or the pleasures of hell? Everyone is sinful in the sinful world. Where there is heaven there is no hell and where there is hell, there is no heaven.
Student: Where is heaven now?
Baba: Now the soul can be in heaven. We can achieve such a stage of the mind and intellect that we do not experience sorrow; we find happiness even in the situations of sorrow. Even if we are lying in a jail, the mind should feel: nobody is as happy in the world as me. The other accomplices and companions living in the jail should also feel that there is certainly something special. This person remains so happy; he remains so enthusiastic and zealous. What is the matter?

…………………………………………………………………………………………………
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info